www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

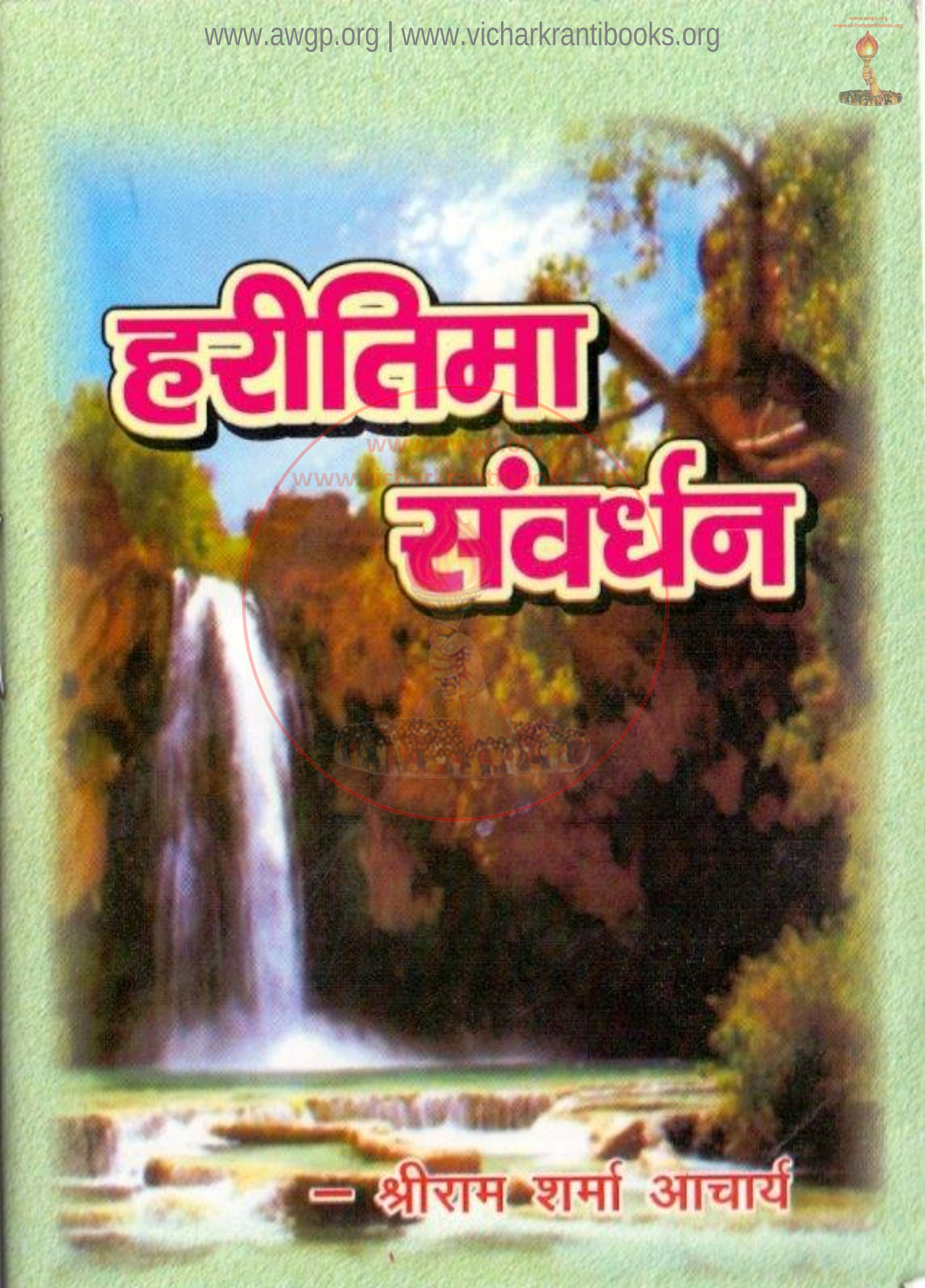

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा वृद्धि

पृथ्वी का जीवन प्राणियों और वनस्पतियों में विभक्त है । दोनों एक दूसरे के पूरक और पोषक हैं । पृथ्वी पर घास पात के रूप में छोटी वनस्पतियां और बड़े पौधों के रूप में झाड़ और वृक्ष बढ़ते हैं । प्राणियों को इन्हीं के सहारे जीवन धारण करने का अवसर मिलता है । पशु पक्षी मनुष्य सभी घास पात पर जीवित हैं । शाक भाजी, फल पत्ते यह भी वनस्पति हैं । मनुष्य इन्हीं को खाकर जीवित रहते हैं । वनस्पतियों के अभाव में पशु पक्षी मनुष्य कोई भी जीवित नहीं रह सकता । समुद्र और तालाबों में भी कई प्रकार की हलके किस्म की घास पाई जाती है । प्रायः उसी पर जल जंतुओं का निर्वाह होता है । हिंस्र प्राणी मांस खाते पाए जाते हैं पर मांस भी आखिर वनस्पतियों का एक विशेष उत्पादन ही तो है । दूध की पृथक सत्ता नहीं । पशु घास खाते हैं और वह घास ही दूध बन जाती है । ऐसे प्राणी इस संसार में अति स्वल्प मात्रा में ही होंगे जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वनस्पतियों का अपने निर्वाह में कोई उपयोग न करते हों । पशु पक्षियों से लेकर कीड़े मकोड़ों तक इस या उस प्रकार वनस्पति के सहारे ही प्राण धारण किए हुए हैं । आस पास में बरसने वाली सूर्य की किरणें और जमीन से उगने वाली वनस्पति ही जीवन के दो प्रधान आधार हैं । इस संसार में जितना वैभव, सौंदर्य, जीवन, आनंद दृष्टिगोचर होता है उसे इन्हीं दो ईश्वरीय विभूतियों या अनुग्रह कहना चाहिए ।

खाद्य रूप में वनस्पतियों का उपयोग प्रत्यक्ष है । इसके अतिरिक्त उनका अप्रत्यक्ष लाभ और भी बड़ा है । पौधे ऑक्सीजन वायु उगलते और कार्बनडाई ऑक्साइड खाते हैं । मनुष्य व पशु कॉर्बनडाई ऑक्साइड उगलते और ऑक्सीजन खाते हैं । इस प्रकार मनुष्य पौधे की सांस पीकर जीवित रहते हैं । यह आदान प्रदान इतना महत्वपूर्ण है जिसे खाद्य उपलब्धि से भी बढ़कर महत्व दिया जाना चाहिए । संसार में वृक्ष न रहें तो मनुष्य की सांस द्वारा छोड़ी हुई तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न हुई

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषैली हवा से यह सारा वातावरण भर जाएगा और फिर अपनी धरती पर एक भी प्राणी का जीवन संभव न रहेगा ।

वस्तुओं के मूल्यांकन में प्रायः हमसे भूल ही होती रहती है । धन दौलत को महत्व दिया जाता है पर उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता, जिन पर हमारा जीवन निर्भर है । वनस्पति वर्ग को अपना जीवन साथी मानकर चलना चाहिए और उन्हें सुविकसित स्थिति में रखना अपने ही हित साधन का एक अति महत्वपूर्ण अंग मानना चाहिए । वनस्पति को तुच्छ न माना जाए, उसका महत्व समझा जाए और उसके अधिक उत्पादन, संवर्धन पर ध्यान दिया जाए ।

जनसंख्या वृद्धि के कारण कल कारखाने, निवास, सड़क आदि बनाने में बहुत सी भूमि वनस्पति उत्पादन से रहित हो गई । घास उत्पन्न करने वाली भूमि अब दिन दिन कम होती जा रही है । फलतः पशु पक्षियों के निर्वाह साधन घट रहे हैं और वे कम होते चले जा रहे हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्मरण रखा जाए कि पक्षी उन कीड़ों को खाते हैं जो फसल नष्ट करते हैं । वे बीज खाते हैं और अपनी बीट द्वारा उन बीजों को दूर दूर तक पहुंचा कर इस धरती पर जहां तहां वृक्ष, झाड़, जड़ी बूटियों के बोने उपजाने की भूमिका निभाते हैं । पशुओं के मल मूत्र एवं अस्थि मांस से पृथ्वी को खाद मिलती और उपज बढ़ती है । अस्तु वनस्पति और पशु पक्षियों का संतुलन यथावत् बना रहना चाहिए अन्यथा जीवन संकट की विभीषिका सामने आ खड़ी होगी ।

इन दिनों बिना उपजाऊ जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं और ऊबड़खाबड़ भूमि को समतल किया जा रहा है, फिर भी वह उपलब्धि इतनी नहीं है कि निवास व्यवस्था के उपयोग के लिए छिनी जमीन की क्षति पूर्ति हो सके । इन दिनों जंगल कट रहे हैं । कृषि के लिए जमीन चाहिए इसीलिए जंगलों को साफ किया जा रहा है और वृक्षों की संख्या घट रही है । जलावन, भवन निर्माण एवं व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए लकड़ी की मांग बढ़

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रही है फलतः वृक्ष तेजी से कटते तो हैं पर उनकी स्थान पूर्ति नहीं होती । यह दुहरा संकट है । वृक्षों की कमी पड़ते जाने से उनके द्वारा लकड़ी की आवश्यकता पूरी होने में कठिनाई उत्पन्न होती है और उसकी मंहगाई बढ़ती है । पत्तियों के सड़ने से भूमि को खाद मिलता है । उनकी कमी से भूमि की उर्वरा शक्ति घटेगी । फलतः अन्न और घास पात का उत्पादन कम पड़ने से मनुष्यों और पशुओं के लिए संकट खड़ा होता चला जाएगा ।

वृक्षों से वर्षा

शुद्ध वायु की कमी पड़ते जाना इससे भी बड़ा संकट है । इस प्रकार वृक्षों को काटना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है । यदि उन्हें काटना ही पड़े तो आवश्यक है कि उतने ही नए पौधे लगा दिए जाएं । सच तो यह है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ वायु शुद्धि की आवश्यकता भी बढ़ेगी और उसकी पूर्ति मनुष्यों के अनुपात से ही वृक्षों की संख्या बढ़ाने से संभव हो सकती है । किंतु हो उल्टा रहा है वृक्ष कटते और घटते जा रहे हैं । फलतः लकड़ी की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता एवं भूमि से प्राकृतिक खाद मिलने में भारी अड़चन हो रही है । शुद्ध वायु का बढ़ता संकट तो इससे भी अधिक बढ़चढ़ कर है ।

वृक्ष घटने के संकट के और भी कई दुष्परिणाम हैं, जिनके कारण अगले दिनों भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । वृक्षों की जड़ें जमीन में फैलती हैं और भूमि रेत बनकर हवा में उड़ने से रुकती है और वर्षा के बहाव में कटने से भी बचती है । यदि पेड़ न रहें तो जड़ों द्वारा भूमि के पकड़े रहने की सुरक्षा समाप्त हो जाएगी और हर वर्षा में उपजाऊ मिट्टी बह बह कर नदी नालों के सहारे समुद्र की ओर लुढ़कती जाएगी। इसी प्रकार हवा के तेज झोंके भूमि को झकझोरेंगे और कड़ी जमीन को रेत के रूप में परिणित करने तथा आंधी के साथ इधर उधर उड़ा ले जाने की हानि पहुंचाते रहेंगे ।

जिन क्षेत्रों में पहले पेड़ थे तब वहां की भूमि बहुत अच्छी और उपजाऊ थी, पर जब वहां के पेड़ कट गए तो धीरे धीरे वहां की उर्वरता घट गई और रेतीले रेगिस्तान दिखाई देने लगे । खाद मिलते

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहने के कारण भूमि की ऊपरी परतें ही उपजाऊ होती हैं । वह पानी में बहने और हवा में उड़ने लगेगी तो निश्चित रूप से रेतीली एवं अनुत्पादक भूमि ही बढ़ेगी । उर्वरता के अभाव में मनुष्यों और पशुओं को भारी संकट का सामना करना पड़ता है ।

वृक्षों का वर्षा से भी घनिष्ठ संबंध है । उनमें एक विशेष आकर्षण शक्ति होती है जिससे बादल खिंच कर आते और पानी बरसाते हैं । जहां वृक्ष कटे हैं वहां उसी अनुपात से वर्षा भी घटेगी । ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहां उन हरे भरे प्रदेशों में काफी वर्षा होती थी परंतु जब उधर वृक्ष कट गए और नंगी भूमि रह गई तो वर्षा की भारी कमी पड़ गई और वे क्षेत्र सूखा ग्रस्त होने के कारण विपत्ति में फंस गए । वृक्ष काट कर जो लाभ उठाया गया था उसकी तुलना में वनस्पति और वर्षा की कमी पड़ जाने की हानि अनेक गुनी कष्टदायक बनकर सामने आई ।

एक ओर भूमि का अन्य उपयोग करने के लिए तथा लकड़ी की आवश्यकता पूरी करने के लिए वृक्षों का काटना आवश्यक है । दूसरी ओर उस कमी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से शुद्ध वायु का संकट, पत्तियों से खाद मिलने की कमी, पक्षियों का आश्रय स्थल घटने से उनका विनाश, फलतः फसल शत्रु कीड़ों की वृद्धि जैसी कितनी ही कठिनाइयां सामने आती हैं । जड़ों द्वारा पकड़े न रहने से भूमि कटती और हवा में उड़ती है । वर्षा की कमी पड़ने से वे क्षेत्र सूखा ग्रस्त होकर दुर्भिक्ष की स्थिति में पहुंचते हैं । सांप छछूंदर जैसी स्थिति है । पेड़ काटे बिना काम भी नहीं चलता और काटने पर उसकी हानि इतनी होती है जिसकी तुलना में लाभ की उपयोगिता निरर्थक बन कर रह जाती है ।

वृक्षारोपण

इस संकट का सामना करने का उपाय एक ही है कि नए वृक्ष लगाने का उत्साह उत्पन्न किया जाए और उसमें हर मनुष्य को पूरी दिलचस्पी बनी रहे । यदि उत्साह हो तो उसे कार्यान्वित करना कुछ भी कठिन नहीं है । कृषि में प्रयुक्त होने वाली भूमि के अतिरिक्त भी जहां तहां ऐसी जमीन पर्याप्त मात्रा में रहती है जिसमें वृक्ष उगाए जा सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सरकार वनभूमि को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करती है और सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने जैसे प्रयास करती है पर इतना बड़ा कार्य सरकार पर छोड़ देने से निश्चिंत नहीं रहा जा सकता । इसके लिए जन साधारण में व्यक्तिगत रूप से अभिरुचि उत्पन्न करनी चाहिए और हरीतिमा अभिवर्धन में अपना उत्साह भरा प्रयास प्रस्तुत करना चाहिए । वृक्षारोपण हमारी महत्वाकांक्षाओं में सम्मिलित रहना चाहिए । जिस प्रकार अपना व्यवसाय धन सम्मान प्रभाव यश आदि बढ़ाने में उत्साह रहता है वैसे ही श्रेयस्कर सफलताओं में एक हरीत्तिमा अभिवर्धन एवं वृक्षारोपण को भी सम्मिलित रखना चाहिए।

शोभा, सौंदर्य, कला और सुसज्जा की दृष्टि से घर आंगन में, बरामदे के आस पास आम तौर से थोड़ी बहुत कच्ची जमीन रहती है, उसमें फूल लगाए जा सकते हैं । खंभों के सहारे छतों पर, छप्परों पर बेलें चढ़ाई जा सकती हैं और अपना घर प्राकृतिक शोभा सुषमा से सुसज्जित बनाया जा सकता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शाक वाटिका

बड़े शहरों और कस्बों में जगह की कमी पड़ती है वहां छत आंगन सभी भरे होते हैं । इस स्थिति में गमलों का स्तेमाल किया जा सकता है । मिट्टी, सीमेन्ट के गमले बाजार में बिकते हैं। पुराने डिब्बे कनस्तर काट छांट कर उन्हें ऊपर से रंग पोत दिया जाए तो अच्छे खासे गमले बन सकते हैं। पैकिंग में आने वाली लकड़ी की पेटियां भी काम दे सकती हैं, यहां तक कि नाद या टूटे घड़े के पैंदे भी इस प्रयोजन को पूरा कर सकते हैं । उनमें मिट्टी भर ली जाय, थोड़ा सा खाद डाला जाए, फूलों के पौधे और बेलें उन्हीं में आसानी से बोए जा सकते हैं । उनकी सिंचाई रखवाली पर ध्यान रखा जा सके तो अपना घर हरियाली से सुशोभित और रंगबिरंगे फूलों से सुसज्जित दिखाई पड़ सकता है । इसमें न तो कोई बड़ा खर्च करना पड़ता है और न भारी परिश्रम । सच तो यह है कि यह एक ऐसा मनोरंजन है, जिसमें अपनी सृजनात्मक शक्ति, कुशल बुद्धि एवं कलात्मक दृष्टि का विकास होता है। श्रम करने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का नया आधार मिलने से आलस्य, प्रमाद के रूप में छाई रहने वाली दरिद्रता से भी छुटकारा मिलता है । जागरूकता, स्फूर्ति एवं कुछ करने की उमंग न केवल अपने में वरन पूरे परिवार में उत्पन्न की जा सकती है । बच्चों को ऐसे कार्यों में स्वभावतः उत्साह रहता है । यदि उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया जा सके तो सहज ही वे अपने लिए एक सृजनात्मक कार्य प्राप्त कर लेंगे और तोड़ फोड़ की अव्यवस्था फैलाने से बचेंगे ।

फूल बेलों की तरह ही घरों में शाक वाटिका लगाई जा सकती है । जिनके पास कच्ची खाली जगह है वे उसमें ऋतु के अनुरूप शाक भाजी बो लिया करें । जिनके घरों में पक्की जगह है वे गमले, टोकरियां, पेटियां इस्तैमाल कर सकते हैं । हाथ की उगाई वस्तुओं के प्रयोग में एक भावनात्मक आनंद होता है । छतों का पूरा इस्तैमाल किया जा सके तो पक्के घरों में भी इतनी सब्जी उगाई जा सकती है जिससे किसी छोटी गृहस्थी का काम भली प्रकार चल सके । यह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बचत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । सबसे बड़ा लाभ परिवार के लोगों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होना है जिसका मूल्य शाक भाजी उगाने के सहारे मिलने वाले आर्थिक लाभ से भी कहीं अधिक है।

अदरक, हरी मिर्च, टमाटर, पोदीना, धनिया, पालक जैसी चटनी के काम आने वाली वस्तुएं तो हर महीने हर मौसम में दो चार गमलों में ही उगी रह सकती हैं और उनके सहारे अपने उत्पादन का गर्व तथा आनंद सदा ही मिलता रह सकता है । इतना तो हर व्यक्ति कर सकता है । जिनके पास भूमि नहीं है जो नौकरी व्यवसाय आदि में व्यस्त रहते हैं उनके लिए भी वनस्पति उत्पादन में इतना योगदान तो बड़ी आसानी से संभव हो सकता है ।

जिनके पास भूमि है, वे उसका अन्यमनस्क होकर उपयोग न करें वरन यह दृष्टि रखें कि इसमें अधिकाधिक हरीतिमा का उत्पादन करना है । अन्न शाक, तिलहन, कपास आदि की फसलें किस प्रकार अधिक मात्रा में उपजा सकते हैं, इसी के लिए उनका चिंतन और प्रयास उत्साह पूर्ण स्थिति में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहना चाहिए । इस क्षेत्र में भूमिधरों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा चलनी चाहिए कि किसका पुरुषार्थ अग्रणी रहा । अधिक शस्य संपदा का अनुदान कितना किस स्तर का किसने रखा, इसे प्रतिष्ठा और प्रतिस्पर्द्धा का विषय बनाना चाहिए और इस घुड़दौड़ में बाजी मारने की महत्वाकांक्षा हर किसी में जागनी चाहिए ।

समुचित जुताई, सिंचाई, खाद, बीज और रखवाली का जागरूक पुरुषार्थ, उत्साह और तत्परता के साथ इस क्षेत्र में जुट पड़े तो हमारी फसलों का परिमाण और स्तर आज की अपेक्षा कल ही दूना हो सकता है । उस श्रम यज्ञ का परिणाम यह होगा कि पशुओं और मनुष्यों को अधिक खाद्य प्राप्त करने और परिपुष्ट होने का अवसर मिलेगा । यह पुण्य परमार्थ अपने लिए भी तत्काल सत्परिणाम उपस्थित करेगा, अधिक मेहनत से अधिक कमाई होगी, पुरुषार्थी को आत्मसंतोष अनुभव करने, सराहना पाने और संपन्न बनने का अवसर मिलेगा ।

जो स्वयं कृषि नहीं कर सकते, उसे जिस तिस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को भाड़े, बटाई पर देते फिरते हैं उनके लिए यही उचित है कि इस प्रकार धरित्री की उत्पादन क्षमता में उपेक्षा अवरोध उत्पन्न न करें और उसे उनके हाथ बेच दें जो उसमें पूरा ध्यान और पूरा श्रम नियोजित कर सकने की स्थिति में हैं । इससे अधिक हरीतिमा उत्पादन करने का पथ प्रशस्त होगा । किसान को मात्र अन्न ही नहीं शाक और फल उगाने की बात भी सोचनी चाहिए । मानवी आहार में शाकों और फलों का भी अति महत्व है । कृषि भूमि का एक भाग फल शाक उगाने और फलों का छोटा उद्यान लगाने के लिए भी सुरक्षित रखा जाए । जिस प्रकार गौपालन करके परिवार के स्वास्थ्य संरक्षण की व्यवस्था बनाई जाती है, ठीक उसी प्रकार शाक और फलों की आवश्यक मात्रा घर के लोगों को मिलती रहे यह ध्यान रखने योग्य बात है । अन्न और दूध की ही तरह, शाक, फल भी भोजन के आवश्यक अंग हैं । यदि यह तथ्य समझ लिया जाए तो हर कृषक को इतने उत्पादन में भी अनाज कपास तिलहन आदि उगाने की तरह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभिरुचि उत्पन्न होगी । यह उत्पादन आर्थिक दृष्टि से भी अधिक लाभदायक है । कठिनाई केवल इतनी ही है कि चालू ढर्रे पर पहिया लुढ़काने का मानसिक आलस्य जो चल रहा है उसी को चलने देने की आदत बनाए रहते हैं और सोचने, करने की उमंग को फलवती नहीं होने देते । भोजन में कई तरह की वस्तुएं रहने की तरह यदि कृषि उत्पादन में भी शाकों और फलों का उत्पादन आवश्यक मान लिया जाए तो आज की अपेक्षा कल स्थिति ही दूसरी होगी । उत्पादक बनेंगे, अपने परिवाार की स्वास्थ्य वृद्धि करेंगे और उस उपयोगी उपज से अनेकों को लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा ।

छायादार पेड़ उगाएं

जलाऊ ईंधन, इमारत तथा उपकरणों के लिए लकड़ी की जरूरत किसान की ही तरह उनको भी पड़ती है, जिनके पास जमीन नहीं है । अस्तु जो जमीन कृषि के उपयुक्त नहीं है उस पर जलाऊ लकड़ी के पेड़ लगाए जाएं । इससे भूमि की शोभा सौंदर्य बढ़ेगा और उसे हवा पानी के दबाव से नष्ट न

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होने एवं अधिक वर्षा पाने का लाभ मिलेगा और मनुष्यों एवं पशु पक्षियों की कई तरह की आवश्यकताएं पूरी होंगी । खेतों पर भी पशुओं, मनुष्यों को छांह पाने के लिए आश्रय की आवश्यकता पड़ती है । उसकी पूर्ति के लिए आम, जामुन, शहतूत, कटहल जैसे अधिक छाया और अधिक फल देते रहने वाले वृक्ष लग सकते हैं । इनसे जगह तो घिरती है पर बिना सिंचाई, जुताई के सहज ही फलों की आमदनी भी तो होती रहती है । फलदार वृक्षों का लगाना और घटिया जमीन में जलाऊ या इमारती पेड़ उगाना लगभग उतना ही लाभदायक होता है जितना कि कृषि की उपज होती है । यदि कुछ कम भी रहे तो भी वृक्ष की बहुमुखी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उनके उत्पादन को ध्यान में रखा जाना और महत्व दिया जाना आवश्यक है ।

यह व्यक्तिगत प्रयासों की बात हुई। भूमि वाले किसान अन्न, शाक एवं वृक्ष उत्पादन में क्या कर सकते हैं यह उनकी चर्चा हुई । बात यहीं समाप्त नहीं होती, इस दिशा में सेवा बुद्धि से सार्वजनिक प्रयासों

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में उत्साह उत्पन्न करने और सहकारिता के आधार पर बढ़ाने की भी आवश्यकता है । जिस प्रकार कितने ही कल कारखाने तथा उद्योग धंधे बड़ी पूंजी से बड़े पैमाने पर खड़े किए जाते हैं उसी प्रकार शाक, फल और लकड़ी उगाने के लिए सहकारी समितियों का गठन होना चाहिए और उन्हें अपना कार्य क्षेत्र उत्पादन बड़े पैमाने पर करने की बात सोचनी चाहिए । बात ध्यान आकर्षित होने की है । अत्यधिक लाभ कमाने का लालच थोड़ा पीछे कर दिया जाए और समाज की आवश्यकता पूर्ण करने वाले उत्पादन को महत्व दिया जाए तो निश्चय ही फल शाक और जल वन की उपज बढ़ाने के लिए कितने ही नए संस्थान खड़े करने की आवश्यकता अनुभव होगी । योजना बनाने वाले देखेंगे कि लूटमार जैसा लाभ न हो पर काम चलाऊ लाभांश इस उद्योग में भी इतना मिल सकता है जिसे पर्याप्त और संतोषजनक कहा जा सके ।

नर्सरी बनें

अच्छे पौधों की नर्सरी हर क्षेत्र में होनी चाहिए,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसमें उस क्षेत्र में अच्छी तरह उग सकने वाले वृक्षों की पौध आसानी से मिल सके । ऋतुओं पर फलने वाले पुष्पों और विभिन्न शाकों के अच्छे बीज सुविधा पूर्वक मिल सकें इसका प्रबंध भी इसी नर्सरी में होना चाहिए । वे अपने यहां पौध उगाने और बीज बेचने के दोनों काम करें । पहाड़ों जंगलों की जमीन को ठीक ठाक करके उनमें पेड़ उगाने का काम प्राय: सरकार का वन विभाग ही करता है । यह कार्य सहकारी समितियां बड़े पैमाने पर करने लगें तो अधिक उत्पादन के कारण सरकार को भी अब की अपेक्षा अधिक लाभ मिलने लगेगा और अनेक व्यक्तियों को नए सिरे से एक व्यवसाय मिलेगा । वृक्ष उगाने के साथ साथ अन्य अनेक सहायक धंधे जुड़े हुए हैं । जैसे रेशम, लाख, शहद, गोंद, कत्था, जड़ी बूटियां आदि का उत्पादन और उसी क्षेत्र में आसानी से हो सकने वाला पशुपालन कृषि के काम आने वाली भूमि भी देश में कम नहीं है । वह ऐसे स्थानों पर है जहां पहुंचने और रहने की सुविधा कम होने के कारण आबादी बस नहीं सकी है । इस प्रकार की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सारी भूमि को सहकारी वृक्ष उत्पादन की योजना के अंतर्गत लिया जा सकता है । सरकारी योगदान से यह प्रयास अत्यधिक सफल हो सकता है और राष्ट्रीय आय बढ़ने एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति का उत्साहवर्धक साधन अनायास सामने आ खड़ा हो सकता है । मिल, कारखाने बनाने चलाने वाले मस्तिष्क और साधन यदि इस क्षेत्र को अपना सकें तो बहुत बड़ा काम हो सकता है । छोटे पैमाने पर भी छोटी छोटी सहकारी समितियां स्थानीय सुविधा और आवश्यकता के अनुरूप कुछ काम कर सकती हैं। शाक उत्पादन और फल उद्यान के छोटे बड़े कार्य तो हर जगह हो सकते हैं, उसे बड़े नगरों में भेजने के लिए ढुलाई का एक नया उद्योग खड़ा हो सकता है । व्यक्तिगत रूप से जिस तरह अन्य व्यवसाय किए जाते हैं, उसी प्रकार इस उद्योग की ओर ध्यान दिया जाने लगे तो प्रतीत होगा कि उपयोगिता और आजीविका की दोनों ही दृष्टि से इस दिशा में किए गए प्रयास कम लाभदायक नहीं हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सार्वजनिक संस्थाएं आगे आएं

सार्वजनिक सेवा संगठनों का ध्यान इस ओर जाना चाहिए और अन्य लोकोपयोगी जनकल्याण के कार्यों में ही एक कार्य वृक्षारोपण को भी गिनना चाहिए और उसके लिए उसी उत्साह से काम करना चाहिए जिस प्रकार कि अन्य परमार्थ कार्यों के लिए किया जाता है । अपने समीपवर्ती क्षेत्र में ऐसे अनेक स्थान दृष्टिगोचर हो सकते हैं जो अर्ध सरकारी या वैयक्तिक होने के कारण उपेक्षित पड़े होते हैं और उन पर ध्यान न दिए जाने के कारण हरीतिमा उत्पन्न कर सकना संभव नहीं हो पाता । ऐसे स्थानों में हरियाली उगाना सार्वजनिक सेवा संगठनों को अपने हाथ में लेना चाहिए ।

पंचायतघर, स्कूल जैसी सरकारी अर्द्धसरकारी इमारतों के आस पास प्रायः खाली जगह पड़ी होती है । उनमें फूलों के जैसे गुलाब, हारसिंगार, चांदनी, गुड़हल, रातरानी, झाड़ लग सकते हैं । नींबू, बेर, अमरूद, अनार, फालसा जैसे फलों के भी प्रायः छोटे पेड़ ही होते हैं। जहां कम

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जगह है वहां इस प्रकार के फल फूल वाले छोटे पेड़ और जहां अधिक जगह है वहां आम, जामुन, शहतूत, लीची, चीकू जैसे बड़े पेड़ लग सकते हैं। पक्की सड़कों और कच्चे रास्तों के किनारे भी इतनी जगह खाली रहती है कि उन पर छोटे बड़े वृक्ष लगाए जा सकें । बड़े आदमियों के बड़े मकान भी काफी जगह घेरे पड़े होते हैं और उनमें पेड़ लगाने की गुंजायश रहती है इनमें इस प्रकार का उत्पादन आसानी से हो सकता है।

झंझट इस आशंका से उत्पन्न होता है कि उत्पादन कर्ता उस पर अपना दावा प्रस्तुत करेंगे और अधिकार जगाने तथा लाभ लेने का प्रयत्न करेंगे । इसका वायदा मौखिक रूप से या लिखित रूप से दे दिया जाए तो अपनी भूमि में वृक्ष लगाने देने से कोई इन्कार न करेगा और सेवा संगठनों को किसी प्रकार की अड़चन न पड़ेगी । सड़क के किनारे वाली जमीन प्रायः सरकारी निर्माण विभाग की होती है । उनके दफ्तर में अपने वृक्षारोपण की सूचना दे दी जाए और उस उत्पादन पर अपने अधिकार का दावा न

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने का लिखित आश्वासन दे दिया जाए तो वैसा करने की स्वीकृति खुशी खुशी मिल जाएगी । गांव के कच्चे रास्तों के किनारे इस प्रकार के आरोपण की स्वीकृति ग्राम पंचायत से ली जा सकती है । स्कूलों या अन्य सार्वजनिक इमारतों में स्थान मिलने में भी कोई अड़चन नहीं हो सकती ।

जहां भी खाली किंतु वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त जगह हो वहां के लिए प्रयास करने पर उनके स्वामी सहज ही स्वीकृति दे सकते हैं। जब अधिकार पाने या लाभ लेने की दृष्टि नहीं है, मात्र वृक्षारोपण के सत्परिणाम से धरती की शोभा और लोकहित मंगल के अनेक संभावनाओं का विकास करना ही अपना लक्ष्य हो तो समझना चाहिए कि हर जगह इसके लिए पर्याप्त भूमि मिल सकती है और अपने ही क्षेत्र में हजारों नए वृक्ष लगा सकना संभव हो सकता है ।

बीज बो देने या पौधा गाढ़ देने का नाम ही वृक्षारोपण नहीं है । यह तो प्रथम दिन का आरंभिक कृत्य है । इस श्री गणेश को ही लक्ष्य प्राप्ति मान बैठने की जैसी भूल नहीं करनी चाहिए । शिशु को जन्म

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देकर ही माता पिता निश्चिंत नहीं हो जाते वरन उसे वयस्क स्वावलंबी बनने तक बराबर भरण पोषण करते हैं यही बात वृक्षारोपण के संबंध में भी है । पौधे लगाने के उपरांत उनकी नियमित सिंचाई, गुड़ाई, खाद एवं रखवाली का प्रबंध होना चाहिए और इसकी योजना तथा व्यवस्था उसी समय बना ली जानी चाहिए जिस समय वृक्ष लगाया गया है । आरोपण का कार्य तो निपटाया जा सकता है किंतु उन्हें सींचने के लिए स्वयं सेवी श्रम प्रक्रिया के कार्य क्रम बनाने और कंधे पर लिए उत्तरदायित्व को उत्साह पूर्वक निभाते रहने की बात प्रारंभ में ही निश्चय कर लेनी चाहिए । लगाए गए पौधों को जानवर चर न जाएं, इसके लिए उनके चारों और सूखे कांटों की नागफनी को पत्थर के टुकड़ों को अथवा जहां जैसी सुविधा हो बाड़ लगा देनी चाहिए । पानी किस मौसम में कितने दिन बाद कितना लगाना पड़ेगा और उसे कौन कहां से किन साधनों से लावेगा इसकी सुनिश्चित योजना बनाई जाए और वृक्षारोपण के पुनीत कर्म में संलग्न हरित सेना के

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं सेवक अपने अपने हिस्से का उत्तरदायित्व बिना आलस्य उपेक्षा के निबाहते रहने का व्रत ग्रहण करें तो समझना चाहिए कि यह आरोपण अपने लक्ष्य तक पहुंच सकने में सफल हो जाएगा ।

जन जन में लोक सेवा की भावना जगाई जानी चाहिए और जिनमें उस प्रकार का उदार उत्साह पाया जाए उनके स्वयं सेवी संगठन खड़े किए जाने चाहिए । इस प्रकार के संगठन अपने सदस्यों को बढ़ाते रहें । श्रम दान के द्वारा मानवीय आदर्शों की अनुकरणीय परंपरा स्थापित करने में यह संख्या बढ़ती रहे तो वृक्षारोपण ग्राम स्वच्छता जैसे अनेकों उपयोगी समाज कल्याण के कार्य संपन्न होते रह सकते हैं। वृक्षारोपण कार्य हेतु स्वयं श्रम करना तथा दूसरों को उसके लाभ समझाना यह दोनों ही कार्य साथ साथ चलने चाहिए । स्वयं सेवक ही दौड़ धूप करते रहें और लोग स्वयं निष्क्रिय बने रहें तो भी कुछ कार्य न चलेगा । स्वयं सेवक तो अपने क्रियाकलाप से उत्साह उत्पन्न करने एवं मार्गदर्शन करने का काम ही कर सकते हैं उनकी दौड़धूप से

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वल्प मात्रा में ही कार्य हो सकता है । सारे देश को हरा भरा बनाने और वृक्ष वनस्पतियों का समुचित उत्पादन रखने के लिए तो प्रत्येक नागरिक में वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्तव्य पालन की वृद्धि होनी चाहिए । हरियाली की समीपता में शोभा, सौंदर्य, आरोग्य एवं राष्ट्रीय तथा मानवीय समस्याओं के समाधान की दृष्टि जुड़ सके तो ही इस प्रयोजन की पूर्ति ठीक तरह हो सकनी संभव है ।

जन साधारण में प्रचार हो

आवश्यक है कि वृक्षारोपण एवं हरीतिमा अभिवर्धन के लाभ जन साधारण को समझाए जाएं और उस विभीषिका का परिचय कराया जाए जिसके अनुसार वृक्ष वनस्पतियों के घटने में पशु पक्षियों एवं मनुष्य के अभावग्रस्त बन कर जीवन मरण की विपत्तियों में फंस जाना निश्चित है । स्वच्छ वायु का अभाव प्राणियों का दम घोटेगा । भूमि क्षरण के कारण अच्छी खासी जमीन रेगिस्तान में बदलती चली जाएगी और प्रकृति इस मूर्खता का दंड वर्षा में कमी करने के रूप में देगी । ऋतुओं का संतुलन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिगड़ेगा और वर्षा ही नहीं सर्दी गर्मी की मात्रा भी असंतुलित होकर मनुष्य का अहित उत्पन्न करेगी ।

प्राकृतिक सौंदर्य का अधिकांश वैभव वन संपदा पर टिका हुआ है उद्यानों की परंपरा मिट जाए, पेड़ झाड़ न रहें तो यह धरती कितनी कुरूप लगेगी । इसे उन मरुस्थलों में जाकर ही जाना जा सकता है जहां हरीतिमा का अभाव है । वे क्षेत्र श्मशान जैसे निष्प्राण और भयावह लगते हैं शोभा सुसज्जा की दृष्टि से पेड़ पौधों को प्रथम स्थान दिया जाना चाहिए । घरों में हरियाली उगाने और बेलें चढ़ाने और फूल लगाने का प्रबंध उसी सुरुचि में सम्मिलित किया जाना चाहिए जिसमें कि बालों में कंघी करना, कपड़ों को धोना, मकानों को पोतना जैसे कार्य दैनिक जीवन में संपन्न किए जाते है । कमरों में टंगे चित्रों में भी प्राकृतिक दृश्यों का समावेश रहता है । यह सुरुचि समाज पर अंकित रहने तक सीमित न रहकर यदि प्रत्यक्ष बन सके तो उससे सुरुचि को कल्पना तक सीमित न रहने देने से आगे बढ़ कर प्रत्यक्ष बनने का भी अवसर मिलता है और उस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयास में कितने ही प्रकार की उपलब्धियों से लाभान्वित हुआ जा सकता है ।

भारतीय धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण का भारी महत्व एवं पुण्य माना गया है । श्रावण मास में हरियाली अमावश्या और हरियाली तीज दो पर्व विशेष तथा इसी लिए हैं कि उन उत्सवों पर नए वृक्ष लगाए जाएं । वर्षा ऋतु में उनके आसानी से लगने की संभावना रहती है उस अवसर पर और कुछ न बन पड़े तो तुलसी के पौधे घरों में स्थापित करने और उनमें नित्य जल सिंचन करते रहने का धर्म कृत्य करने का प्रचलन तो अभी भी है । तुलसी बहुत ही आरोग्यवर्धक पौधा है । उसमें घर की वायु शुद्धि कीटाणुओं का नाश वातावरण में सात्विकता तथा कई बीमारियों में प्रभावशाली औषधि का प्रयोजन पूरा होता है । वृक्षारोपण की प्रेरणा तो उस स्थापना के पीछे स्पष्ट रूप से कार्य करती है । पिछले दिनों प्रथा थी कि पुरोहित लोग अपने यहां तुलसी के पौधे उगाते थे और उन्हें प्रत्येक यजमान के घर हरियाली अमावश्या के दिन स्वयं जाकर स्थापित कराते थे ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस घर में तुलसी का पौधा न होता उसमें अन्न ग्रहण न करते थे । इस प्रचलन से पेड़ पौधों के महत्व एवं उस स्थापना में धर्म भावना का समावेश परिलक्षित होता था ।

देवता और पितरों के नाम पर उनकी आत्मा की तुष्टि एवं कीर्ति बनाए रखने के लिए स्मारक के रूप में वृक्षों की स्थापना भी धर्म मान्यताएं सम्मिलित हैं । अपने पूर्व पुरुषों की स्मृति में अमीर लोग धर्मशाला, मंदिर, पुस्तकालय, कुंआ, तालाब आदि बनाते हैं । सर्व साधारण के लिए यह भूमिका सरल है किंतु लाभदायक स्मारक के रूप में फलदार वृक्षों का आरोपण करें पूर्वजों की अथवा अपनी स्मृति के रूप में कई लोग बड़, पीपल, आंवला आदि का वृक्ष लगाते हैं । इसमें अन्न क्षेत्र की तरह कितने प्राणियों को पोषण और कितनों को ही धर्मशाला की तरह आश्रय मिलता है । गीता में भगवान ने ''अस्वत्थ सर्व वृक्षायां'' कहकर पीपल के आरोपण देवालय की स्थापना के समतुल्य पुण्य परमार्थ बताया है । वृक्षों को कर्ण, दधीचि, हरिश्चंद,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोरध्वज, बलि, वजिश्रवा जैसे आत्म दानियों के समान गिना जाता है । परोपकार के लिए ही वे फलते फूलते और जीवन देते हैं । उनकी छाया के नीचे थके मादे प्राणी आश्रय पाते हैं । प्राचीन काल में तो आरण्यकों की छाया में ही बड़े बड़े गुरुकुल चलते थे । ऋषियों की कुटिया उन्हीं की छाया में बनी होती थीं । अभी वे गरीबों के निवास के लिए सुरक्षित मकान का काम देते हैं ।

संतान के पालन में जो आनंद आता है वही पेड़ पौधे लगाने और उन्हें सींचने बढ़ाने से मिल सकता है । मनोरंजन के लिए कई प्रकार के पशु पक्षी डोल जाते हैं । उनके स्थान पर फलते फूलते वृक्षों का पालन और भी अधिक सुखद हो सकता है । पिंजड़ों में बंद करके पक्षी और रस्से में जकड़ कर पशु पाल कर अपना मनोरंज करने वाले यदि लता पुष्प उगाने और घरेलू उद्यान लगाने की बात सोचने लगें तो वे देखेंगे कि किसी प्राणी को बंधन में बांधे बिना मनोरंजन का कितना स्वस्थ और सात्विक आधार हाथ लग गया ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जड़ी बूटियां आयुर्वेदिक औषधियों का प्रमुख आधार हैं । आज सही और ताजी जड़ी बूटियां मिलने में भारी कठिनाई हो रही है । फलतः अपने चिकित्सा विज्ञान की उपयोगिता घटती जा रही है । फिर जड़ी बूटियां उगाने का कार्य हाथ में लिया जा सके तो असली और ताजी जड़ी बूटियों से बनी आयुर्वेदिक औषधियां ऐलोपैथी दवाओं की तुलना में कहीं अधिक निर्दोष एवं गुण कारक सिद्ध हो सकती हैं साथ ही उत्पादक का समुचित लाभ एवं यश प्राप्त करते हुए जन साधारण को महत्वपूर्ण सेवा करने का अवसर मिल सकता है ।

फलों की अपने देश में कितनी कमी और मंहगाई है । यही बात मेवों के संबंध में है । अब तक आयात करने पड़ते हैं । फलों का उद्यान लगाने और मेवा का वृक्ष लगाने का कार्य यदि योजनाबद्ध रूप से किया जा सके तो उसमें आर्थिक लाभ तो स्पष्ट है ही । पौष्टिक खाद्य की आवश्यकता भी उस उत्पादन से पूरी हो सकती है । अफीम, तंबाकू आदि हानिकारक पदार्थों की कृषि करने वाले शराब

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिगरेट आदि का उद्योग चलाने वाले यदि अपनी बुद्धि और पूंजी फल और मेवा के उद्यान लगाने में नियोजित कर सकें तो उससे वे स्वार्थ और परमार्थ का अच्छा समन्वय कर सकते हैं । विष्णु स्मृति में वृक्षारोपण का पुण्य बताते हुए कह गया है–

वृक्षारोपयितुर्वृक्षाः परलोके पुत्रा भवन्ति ।
वृक्षप्रदो वृक्षप्रसूनैर्देवाहे प्रीणयति–
फलैश्चतिथीन् छाययाचाभ्यागतान्
देवे वर्षत्युदकेन पितृन ।
पुष्प प्रदानेन श्रीमान् भवति ।
कूपारामतड़ागेषु देवतातननेषु च ।
पुनः संस्कारकर्ता च लभते मौलिक फलम् ॥

अर्थात्–जो मनुष्य वृक्षों का आरोपण करता है वह वृक्ष उसके परलोक में पुत्र होकर जन्म लेते हैं वृक्षों का दान करने वाला वृक्षों के पुष्पों के द्वारा देवों को प्रसन्न करता है । फलों के द्वारा अतिथियों को संतुष्ट किया करता है और मेघ के बरसने पर छाया के द्वारा अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है । पुष्पों का दान करने से समृद्धिशाली

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होता है । कुआं, उद्यान, तालाब और देवायतन का पुनःसंस्कार अर्थात् जीर्णोद्धार कराने वाला व्यक्ति मौलिक फल प्राप्त किया करता है अर्थात् उनके नूतन निर्माण कराने के समान ही पुण्य फल पाता है ।

इसके विपरीत जो वृक्षों को नष्ट करते हैं उनकी निंदा की गई है । ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है—

मा का कम्बीरमुद्वहो वनस्पतिन शस्तोर्वि हि नीनशः ।
मोत सूरो अह एवा जन ग्रीवा आदधते वेः ॥

ऋग्वेद ०६/४८/१७

अर्थात्—जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पक्षियों की गर्दन मरोड़ कर उन्हें दुख देता और मार डालता है तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुख न दो, इनका उच्छेदन न करो ये पशु पक्षियों और जीव जंतुओं को शरण देते हैं ।

वृक्षों और वनस्पतियों के सरल उत्पादन में जितना स्वार्थ परमार्थ का समन्वय है उतना कदाचित ही अन्य किसी में होगा । ऐसे उपयोगी कार्य के लिए जन जन के मन में प्रबल उत्साह उत्पन्न किया जाना चाहिए ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

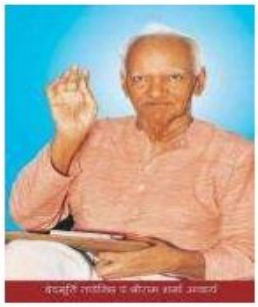

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org